“प्रदीप सौरभ के साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड

के मानवय विद्या संकाय अंतर्गत पीएच. डी. (हिंदी)उपाधी हेतू प्रस्तुत

शोध प्रबंध का प्रारूपण

शोधकर्ता

शेख महंमद मुजाहेद शेख अहेमद

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. जहीरूद्दीन र. पठान

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर महाविद्यालय

उमरी जि. नांदेड

जुलाई 2019

“प्रदीप सौरभ के साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश”

- भूमिका
- अनुसंधान : हेतु एवं उद्देश्य
- अनुसंधान : पूर्वानुमान
- अनुसंधान : उपयोगिता
- अनुसंधान : पद्धतियाँ
- अनुसंधान : सीमाएँ
- अनुसंधान : रूप-रेखा

प्रथम अध्याय : प्रदीप सौरभ व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय : समकालीन रचनाकार और प्रदीप सौरभ

तृतीय अध्याय : प्रदीप सौरभ की कहानियों में चित्रित सामाजिक परिवेश

चतुर्थ अध्याय : प्रदीप सौरभ के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक परिवेश

पंचम अध्याय : प्रदीप सौरभ की कविताओं में सामाजिक परिवेश

षष्ठम अध्याय : प्रदीप सौरभ के संपादित साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश

सप्तम अध्याय : उपसंहार और निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची :

❖ भूमिका :

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटित घटनाओं का, बदलाव का, मूल्यों का प्रतिबिंब परिवेश बनकर साहित्य में झलकता है। परिणाम स्वरूप हमें समाज व्यवस्था के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होने लगता है। सामाजिक स्थान, सामाजिक दर्जा, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक परिस्थिति, सामाजिक वर्ग-संघर्ष आदि आयामों का साहित्य में चित्रण होता है। साहित्य ऐसी सामाजिक बातों को उजागर करता है, जिसके कारण हमें सामाजिक बुराइयों का पता चल कर हम सामाजिक विषमताओं को भुलाकर एक सुंदर समाज की निर्मिति करने की प्रेरणा लेते हैं।

सामाजिक सरोकारों की परंपरा का पिछले कुछ दशकों में जिन साहित्यकारों ने प्रमुखता से संवर्धन किया है, प्रदीप सौरभ जी उन में अग्रणी है। बिना किसी शोर अथवा वाद-विवाद के अपनी रचनात्मक उपस्थिति से उन्होंने वर्तमान हिंदी साहित्य को खास गरिमा, गतिशीलता और प्रतिष्ठा प्रदान की है। 21वीं सदी के प्रथम दशक से आज तक प्रदीप सौरभ जी हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर बने हैं। वह अपने साहित्य में समकालीन सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण बयान करते हैं। प्रदीप सौरभ जी ने चार उपन्यास, कथा संग्रह, कविता संग्रह, पथनाट्य, निबंध संग्रह, आदि का लेखन किया है।

प्रदीप सौरभ जी के साहित्य पर कई विषयों पर संशोधन कार्य कई विश्वविद्यालयों में चल रहा है। गुरुवर्य और शोध मार्गदर्शक डॉ. जहीरूद्दीन पठान जी के मार्गदर्शन के कारण ही इस चुनौतीपूर्ण विषय पर संशोधन करने के लिए तैयार हुआ हूँ। प्रदीप सौरभ जी के साहित्य में सामाजिक परिवेश को देखते हुए शोध कार्य करने हेतु मैंने अपने शोध का शीर्षक “प्रदीप सौरभ जी के साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश” दिया है। शोध शीर्षक की सीमा ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अनुसंधान सात अध्यायों में विभाजित करके शोध कार्य किया जाएगा।

❖ अनुसंधान : हेतु एवं उद्देश्य

अनुसंधान कार्य को एक निश्चित दिशा देकर ही उससे वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुसंधान कार्य के हेतु एवं उद्देश्य की आवश्यकता होती है। प्राप्त अनुसंधान कार्य करने के पीछे भी सकारात्मक हेतु एवं उद्देश्य है। वह निम्नांकित है-

1) सामाजिक परिवेश की अवधारणा का अध्ययन करना।
2) प्रदीप सौरभ जी के समकालीन परिवेश का अध्ययन करना।

3) क्या प्रदीप सौरभ जी सामाजिक परिवेश को जान पाए क्या? वे सामाजिक विषमता को महसूस कर पाए? क्या वे अपने समकालीन सामाजिक परिवेश को वर्तमान काल के साथ जोड़ पाए? ऐसे कई प्रश्नों का जानना है।
4) एक सुंदर समाज के लिए प्रदीप सौरभ जी किन प्रचलित मान्यताओं का विरोध और किन मान्यताओं का समर्थन कर रहे हैं।
5) प्रदीप सौरभ जी के उपन्यासों में अल्पसंख्याक, तृतीय जेंडर जैसी उपेक्षित वर्गों का अध्ययन सामाजिक परिवेश के आधार पर करना है।
6) प्रदीप सौरभ जी में चित्रित सामाजिक परिवेश के यथार्थ को जानना।

❖ अनुसंधान : पूर्वानुमान

किसी भी विषय पर अनुसंधान कार्य करने से पूर्व उस अनुसंधान कार्य के पूर्वानुमान या कामचलाऊ निष्कर्ष प्रतिपादित किया जाता है। जिससे अनुसंधान को एक निश्चित दिशा प्राप्त होती है इस, कारण संशोधन कार्य सफलता की ओर बढ़ता है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उपर्युक्त ऐसे कार्यवाहक पूर्वानुमान निर्धारित की है। वह निम्नांकित हैं-

1) मानव समाज के इतिहास में सामाजिक परिवेश का अस्तित्व होता है।
2) साहित्य समाज का दर्पण होता है।
3) सामाजिक परिवेश ही लेखक को लेखन की प्रेरणा देता है।
4) प्रदीप सौरभ जी का कथा साहित्य सामाजिक परिवेश और सामाजिक यथार्थ पर आधारित है।
5) प्रदीप सौरभ जी का लेखन साहित्य वर्तमान समाज का प्रासंगिक आख्यान है।
6) प्रदीप सौरभ जी का साहित्य सामाजिक और शोषक और शोषित प्रवृत्ति के माध्यम से सामाजिक बदलाव की नई सोच और नई मूल्य देते है।
7) प्रदीप सौरभ जी स्वतंत्रता समता बंधुता और न्याय जैसे मानवीय एवं प्राकृतिक मूल्यों के पक्षधर है।

❖ अनुसंधान : उपयोगिता

- ✓ 21वीं सदी के सजग रचनाकार के रूप में प्रदीप सौरभ जी की वर्तमान समाज को पहचान होगी।

- ✓ साहित्य समाज का दर्पण होता है। ऐसे साहित्यिक मान्यता का यथार्थ परिचय होगा।
- ✓ सामाजिक सुधार और सामाजिक परिवर्तन के लिए नई दिशा और सोच मिलेगी।
- ✓ प्रदीप सौरभ जी ने अपने साहित्य में सामाजिक परिवेश के कौन-कौन से आयामों का परिचय दिया है, इसकी पहचान होगी।
- ✓ प्रस्तुत शोध के माध्यम से वर्तमान युवाओं को सामाजिक परिवेश को सुधारने की प्रेरणा मिलेगी।

❖ अनुसंधान : पद्धतियाँ

किसी भी विषय के अनुसंधान कार्य करते समय अनुसंधान की पद्धतियों को अपनाया जाता है। इसलिए प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्नांकित शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

a) आलोचनात्मक शोध पद्धति
b) वर्णनात्मक शोध पद्धति
c) तुलनात्मक शोध पद्धति
d) व्याख्यात्मक शोध पद्धति

❖ अनुसंधान : सीमाएँ

हर संशोधन की कुछ सीमा होती हैं। उसी सीमा में रहकर ही शोधार्थी को अपने संशोधन को पूर्ण करना पड़ता है। प्रस्तुत संशोधन की भी अपनी सीमा हैं।

I. प्रस्तुत संशोधन केवल सामाजिक परिवेश को आधार मानकर ही पूरा किया जाएगा।
II. प्रदीप सौरभ जी के उपन्यास, बाल कहानियों का संग्रह, पथनाट्य, काव्य संग्रह, संपादित साहित्य, आदि का अध्ययन किया जाएगा।
III. प्रदीप सौरभ जी के साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश की तुलना वर्तमान सामाजिक परिवेश के साथ करके प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।
IV. प्रदीप सौरभ जी के समकालीन रचनाकारों का अध्ययन करना है।
V. प्रदीप सौरभ जी के साहित्य का केवल सामाजिक परिवेश के आधार पर संशोधन करना है।

❖ अनुसंधान : रूप-रेखा

“प्रदीप सौरभ के साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश”

शोध कार्य की सुविधा हेतु प्रस्तुत विषय को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है, निम्नानुसार है-

1. प्रथम अध्याय : प्रदीप सौरभ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में प्रदीप सौरभ जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दो चरणों में विभाजित किया जाएगा। प्रथम चरण के अंतर्गत उनका जन्म, माता-पिता, परिवारजन, बचपन, शिक्षा, विवाह, नौकरी आदि बातों का अध्ययन विस्तार से किया जाएगा। तो दूसरे चरण के अंतर्गत उनके उपन्यासों, कहानी संग्रह, काव्य संग्रह, संपादित साहित्य आदि का विस्तार से परिचय दिया जाएगा।

प्रदीप सौरभ जी का जन्म 5 सितंबर 1959 को कानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। उन्होंने अभी तक उपन्यास मुन्नी मोबाइल (2009), तीसरी ताली (2011), और सिर्फ तितली (2015), ब्रह्मपुत्र के तट पर (2015), देश भीतर देश, बाल कहानियों का संग्रह पापा मान जाए प्लीज, संपादित भारतेंदु कृत अंधेर नगरी, कविता संग्रह दरख़्त का दर्द है।

2. द्वितीय अध्याय : समकालीन रचनाकार और प्रदीप सौरभ

प्रस्तुत अध्याय में समकालीन रचनाकार की अवधारणा को प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही समकालीन रचनाकार के साहित्यिक परंपराओं का विस्तार से अध्ययन सामाजिक परिवेश के आधार पर किया जाएगा, ताकि सामाजिक परिवेश की दृष्टि से समकालीन रचनाकारों की परंपरा में प्रदीप सौरभ जी के स्थान को देखा जा सके और समकालीन काल परिवेश में प्रदीप सौरभ के साहित्यिक स्थान और योगदान का अध्ययन किया जाएगा।

3. तृतीय अध्याय : प्रदीप सौरभ की कहानियों में चित्रित सामाजिक परिवेश

प्रदीप सौरभ जी ने बाल कहानी संग्रह लिखा है, “पापा मान जाए प्लीज” है। इसका विस्तार पूर्वक अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा।

4. चतुर्थ अध्याय : प्रदीप सौरभ के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक परिवेश

प्रदीप सौरभ जी ने अपने पहले उपन्यास ‘मुन्नी मोबाइल’ में अपनी सशक्त लेखनी से समाज की विद्रूपताओं को बाहर लाने का प्रयास किया है। इसमें सांप्रदायिकता के

वास्तविक चेहरे को जिस प्रकार से उभारने का प्रयास किया है, वह उन्हीं जैसे साहसी पत्रकार से ही संभव है। यह उपन्यास समता विरोधी संबंधों के लिए संघर्ष करते समाज की विद्रूपताओं को सामने लाता है।

'तीसरी ताली' में उभय लिंगी सामाजिक दुनिया के बीच और बरक्स हिजड़ों, गे, लेस्बियन तथा एलजीबीटी समूह के लोगों की सामाजिक जिंदगी का सूक्ष्म विवेचन किया है। 'और सिर्फ तितली' पब्लिक स्कूल शिक्षा की भीतरी परतों को एक-एक करके खोलते हुए पब्लिक स्कूल शिक्षा जगत के अंदर के अच्छे और बुरे पहलुओं को उजागर करता है। 'ब्रह्मपुत्र के तट पर' इसमें ब्रह्मपुत्र के तट पर रहने वाली दो स्त्रियों का जीवन में उनके खाने-पीने की व्यथा-कथा है। स्त्रियाँ जो नदी की तरह ही बहती हुई चली जाती है। दूर देशांतर अजनबी शहरों नगरों में। एक छोटे से परिवार के घेरे में बंदी सुख-दुख झेलती और निरंतर अपने छोड़ आए शहर, नदी-तट घर की स्मृतियों में डुबती-उतरती। कुछ हद तक इस आत्मकथात्मक उपन्यास में अपनी धरती से उखाड़ जाने की पीड़ा एक अमूर्त रूप से हर कहीं उपस्थित रहती है, तथा 'देश भीतर देश' का भी अध्ययन किया जाएगा।

5. पंचम अध्याय : प्रदीप सौरभ की कविताओं में चित्रित सामाजिक परिवेश

प्रस्तुत पंचम अध्याय में प्रदीप सौरभ जी के कविता संग्रह 'दरख़्त का दर्द' है। इन कविताओं में चित्रित सामाजिक परिवेश का अध्ययन इस में किया जाएगा।

6. षष्टम अध्याय : प्रदीप सौरभ के संपादित साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश

प्रदीप सौरभ जी 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' के संपादक विभाग के लंबे अर्से तक जुड़े रहे। उनकी अन्य प्रकाशित कृतियों में निबंधों का संग्रह 'सर्वेश्वर का संसार', संपादित 'भारतेंदु कृत अंधेर नगरी', पथनाट्य 'जो सिर्फ खेल तमाशा नहीं' इनका सामाजिक परिवेश के आयामों द्वारा विस्तार से आलोचना की जाएगी।

7. सप्तम अध्याय : उपसंहार और निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के अंतिम अध्याय में उपसंहार के रूप में पूरे शोध प्रबंध का सार प्रस्तुत किया जाएगा और अनुसंधान करते समय आए हुए अनुभव के आधार पर निष्कर्ष दिए जाएँगे। जो प्रस्तुत शोध प्रबंध की उपलब्धि होगी।

8. संदर्भ ग्रंथ सूची :

i.	मुन्नी मोबाइल	:	प्रदीप सौरभ
ii.	तीसरी ताली	:	प्रदीप सौरभ
iii.	और सिर्फ तितली	:	प्रदीप सौरभ
iv.	ब्रह्मपुत्र के तट पर	:	प्रदीप सौरभ
v.	देश भीतर देश	:	प्रदीप सौरभ
vi.	वाणी प्रकाशन समाचार		
vii.	हिंदी समय		

शोधकर्ता

शेख महंमद मुजाहेद शेख अहेमद

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. जहीरूद्‌दीन र. पठान

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर महाविद्‌यालय

उमरी जि. नांदेड